

स्पन्दन

भास कोंकणी आवसु आमची। लिपि देवनागरी उडगासु दवराची।।

Date of Publication : 1st JUNE 2016

स्मृति दिवस - पुष्पार्चना











केरळ कोंकणी अकादमी

कोच्ची


Sangeeth
Hospital

स्पन्दन

प्रकाशन : केरळ कोंकणी अकादमी, कोच्ची



SPANDAN

Published by :
KERALA KONKANI ACADEMY
8/28, 'Santhery', 1st Floor,
Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road,
Cochin - 682 002. Mobile : 94477 35849
Email : keralakonkaniacademy@gmail.com

खंड : 5 अंक : 6 1938 जेष्ठ

मुखचित्र : रंग भट्, विनायक पंडित, आपू भट् स्मृति मण्डपाकडे चैत्र बहुळ दशमि दीसा (ओवंदु 2-5-16) पुष्पार्चना - कोंकणी सप्ताहाचे अनुबन्ध जाळ्‌नु ।
(Photo : एन. बालकृष्ण मल्या)

लेखनान्तुली मतां त्या त्या बरोवप्याचीं

प्रति - ₹ 5/-
वार्षीक - ₹ 60/-

संपादकीय

अम्मि फूडे चर्चा केल्लोलोचि विषयु। कोंकणी भास गोवान्तु मांत्र न्हयि प्रधान जावनु केरळ, कर्नाटक, महाराष्ट्र राज्यान्तु भारी जननि उल्लोंव्वी/ बोरोंव्वी भास। हाजे फुडे अम्मि एक विनन्ती दवरलेली, पूरा राज्यंय एक जाव्नु लेकूनु साहित्य अकादमी अवार्ड अनि इतर अवार्ड सकटांकय भागु घेंवचाक सन्दर्भु मेळोवंका म्हुण। जाल्यारि एक वर्षा तें चमकीले आनी दुसेरीयि गोवान्तु सीमित जालें।

अवार्डाचे नियम केदना कस्सि भागु घेवंका, ह्यें एक विज्ञापन रूपारि आमका पावेय्लारि अम्मि तें व्होड प्राधान्य दीवनु केरळचे मैन्याळ्यान्तु, प्रादेशिक भाषेचे दैनिकान्तु उजवाडाक हाडताय तसीचि नवे जनांक प्रोत्साहन दित्ताय।

गोवा कोंकणी अकादमी, कर्नाटक कोंकणी अकादमी, कोंकणी साहित्य अकादमी (केरळ) हांचे लगींयि आमची प्रार्थना की तन्नि मुकार सोरनु साहित्य अकादमी अवार्ड पूरा भारतान्तूले बोरोप्यांक मेळचे म्हणु खण्डित कोरोवंका।

कोच्ची,
01-06-2016

सुरेश ए. शेणै,
मुखेल संपादक.

कलामालिं सुवचनं - - अनिता डी. किणी, कोच्ची

"If we are not free, no one will respect us"

"अम्मी स्वतंत्र न्हयि जल्यार, कोणे अम्का मोल दिवना।"



2016 मे 1 - 7 - कोच्चीचे प्रभाकर ज्योति सभाघरान्तु दवोर्नु कोंकणी केन्द्र-गोश्रीपुर अनि अनुग्रहा चारिटबळ ट्रस्ट आयोजित कोंकणी सप्ताहु, चन्द रूपारि संपन्न जल्लो। के.एन.आर. भट्ट,एस.रामकृष्ण किणि, एन. मुरळीधर पै, एन.बालकृष्ण मल्या, सुशीला टी. भट्ट, राणी रामकृष्ण किणि, अनिता डी.किणि, सुमन सदानन्द कम्मंत, वसन्तकुमारी पी.एस, एम. लक्ष्मण किळिकार, के. अनन्त भट, सोमलता आचार, सरस्वती एस. प्रभु, अञ्जली किणि, सुन्दरेशन मास्टर, गोश्रीपुरं हरिकुमार हन्नि मार्गनिर्देशन केल्लें। एल. कृष्ण भट हन्नि उद्घाटन केल्लेले सप्ताहान्तु के. अनन्त भट अध्यक्ष अस्सिले। देवानन्द एस. कम्मत, श्यामळा एस. प्रभु, उमेश भट टी., एम. लक्ष्मण किळिकार वेदीरि उपस्थित अस्सिले। कोंकणी नाटक, गीन्त, इत्यादीक मोलादिक योगदान दीव्नु एवंचे एल. कृष्ण भट्ट, उमेश भट टी. हंका अनि स्कौट्स अनि गैड्सान्तु राष्ट्रपति पुरस्कार मेळ्ळेले अनिरुद्ध डी. पै, प्रथमा एस. भट, अर्चना पी. मल्या हंका सभेन्तु सन्मान केल्ले (फोटो मे अंकान्तु मगलान भित्तेवेले पृष्टारि दिल्लेले अस्सिले)। दुसरे दिसा आपू भट, रंग भट, विनायक पंडित



हंगेले प्रतिमाकडे पुष्पार्चना केल्ली। सत्तवे दिस्सा समापन कार्यक्रमान्तु के. अनन्त भट अध्यक्ष अस्सिले। के.एन.आर. भट, ए. गोपालकृष्ण शेणै, एम. लक्ष्मण किळिकार हन्नि उलेय्लीं। अनिता डी. किणि अनि अञ्जली किणि मुक्कार सोर्नु चेर्डुवांले "अंकुरी" हस्तलिखित कोंकणी सप्ताह स्मरणिका तय्यार केल्ली। अनि के. अनन्त भट हन्नि प्रकाशन केल्ली।

21-5-2016 श्री महालसा देवस्थान (मारदोळ, गोंय) - सुचिता वी. पै हंगेले "महालसा कोंकणी भजन्स - 3" म्हळेले CD Album चे प्रकाशन जल्लें।

24-05-2016, पणजी - कोंकण टाय्म्स पब्लिकेशन अनि इंस्टीट्यूट मिनेझिस ब्रागांझा जोडपालवान आयोजित कार्यक्रमान्तु दवोर्नु तुक्काराम रामा शेट हंगेलो कथाझेलो "भूंयदेवी" अनि दोनि बालगीतांची पुस्तकां "फुलांगण" अनि "पिपुशीं" उजवाडायलें।

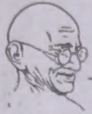
संत केशवदासालि हितोपदेश कथा – 15

प्रो. वी. शिवानन्द भट, पंचाब्जपुरम

"शेणीन्त जनाबाईलो गीन्तु"

आषाढ शुद्ध एकादशि, जुलाई मासाचो उपवासाचो दीसु। निवृत्तिनाथ, ज्ञानेश्वर, सोपानदेव अनी मुक्ताबाई एवं अनेक अन्य सन्त पण्ढरपूर आयले। निज शिष्य कबीरदास सहित रामानन्दस्वामीयि पावलो अनी ते सन्त नामदेवाले घराकडे गेले। नामदेव देवळान्त गेलोमात्र अनी जनाबाई पडोसीलगि कलह करता तन्नी दिकलें। जनाबाईन केल्लेलि उणे शेणि पडोसी घेव्नु गेली म्हणु कलह-विषय। कबीरान प्रश्नु केल्लो - "हे जनाबाई, तूंवें अनी तीणे एक भुंयचेरि शेणि थापल्या, तूं कशि सांगता पडोसी स्त्रीन तुगेली शेणि वेल्लि म्हणु ?"

जनाबाईन सांगलें - "कबीरदासजी, शेणि थापतना हाँव 'विठळ विठळ' म्हणतालीं। तुमीं प्रत्येक शेणि काणु कानालागि धोरनु चोय्यायि। जे शेणीन्त थकून विठळ नाम आयकूयेत्ताकि ती शेणि हाँव केल्लेलि। दुसरि शेण्यो तिगेलि।" जनाबाईन सांगले प्रकारिं कबीरदासान प्रत्येक शेणि काणु परीक्षा केली, अनेक शेणीन्त थकून विठळ नाम आयकीलें ! असलो एक अनुभव कबीरदासाक फूडे जाल्लेना। ताणे जनाबाईलि परमात्मभक्ति वांकाणसिली।



रामराज्य

- विठ्ठलराय भट, कारवार

गांधीबाप्पा, तुवें आमकां
शिकयल्ली सत्य अहिंसेची वाट
आतांच्या पुढार्यांनी
अहिंसेतले अ काण्ण
स च्या पयली लायले
आणि देशाची लायली वाट

तुका हाडचें आशिल्लें रामराज्य
ह्या चोरांनी हाडलें हरामराज्य
हरे राम !

कोंकणी - മലയാളം - English

- शैलेष कम्मत. एम., कोच्ची

मॅळॅब - ആകാശം - Sky
मोड - കാർമേഘം - Cloud
मिञ्चु / झग्लावॅणि/ दुगलावप - മിന്നൽ - Lightening
गुड्गूडु - ഇടി - Thunder
वोत्तांबो / ओट्टाम्बो - അട്ടടവെള്ളം - Drop of water falling from the trees after rain.
वोल्ले - നനഞ്ഞ - Wet
वोल्लट - നനവുള്ള - Wet
व्होळप - ഒഴുകുക - To flow
व्होळेवु- തോർച്ച - Interruption of the Monsoon (Break after continuous rain)
भाटि- മണൽത്തിട്ട - Sand bed / Lagoon

गुल्लीयो कित्ति सांगताय - 24

एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची

एक नक्षत्राक 4 पाद (भाग) आसतात. तशि लेकल्यार 27 नक्षत्रांक कुल 108 पाद. आनी आमकां नक्षत्रांचें नांव, गण, योनी आदि पसून जाणूयां:

	नक्षत्र	देवता	गण	योनी	संख्या
1	अश्विनी (अश्वती)	अश्विनी	दैव	पुरुष	3
2	भरणी	यम	मानुष	पुरुष	3
3	कृत्तिका (कार्त्तिका)	अग्नी	आसुर	स्त्री	6
4	रोहिणी	ब्रह्म	मानुष	स्त्री	5
5	मृगशिरा (मकयिरम)	चन्द्र	दैव	स्त्री	3
6	आर्द्रा (तिरुवातिरा)	शिव	मानुष	स्त्री	1
7	पुनर्वसु (पूणर्त्तम)	अदिती	दैव	स्त्री	4
8	पुश्य (पूयम)	ब्रहस्पती	दैव	पुरुष	3
9	आश्ळेषा (आयिल्यम)	सर्प	आसुर	पुरुष	6
10	मघा (मकम)	पितृ	आसुर	पुरुष	4
11	पूर्वफाल्गुनि (पूरम)	अर्यमा	मानुष	स्त्री	2
12	उत्तर फाल्गुनी (उत्रम)	भग	मानुष	पुरुष	2
13	हस्त (अत्तम)	आदित्य	दैव	स्त्री	5
14	चित्रा (चित्तिरा)	त्वष्टा	आसुर	स्त्री	1
15	स्वाति (चोति)	वायु	दैव	पुरुष	1
16	विशाखा	इन्द्राग्नी	आसुर	पुरुष	4
17	अनुराधा (अनिज़म)	मित्र	दैव	स्त्री	4
18	ज्येष्ठा (तृकेट्टा)	इन्द्र	आसुर	पुरुष	3
19	मूल	निर्याती	आसुर	पुरुष	11
20	पूर्वाशाढ (पूराडम)	जल	मानुष	पुरुष	4
21	उत्तराषाढ (उत्राडम)	विश्व	मानुष	पुरुष	4
22	श्रावण (तिरुवोणम)	विष्णु	दैव	पुरुष	3
23	धनिष्ठा (अविट्टम)	वसु	आसुर	स्त्री	5
24	शतभिषा (चतयम)	वरुण	आसुर	स्त्री	100
25	पूर्वभाद्रपद (पूरुरुट्टाति)	अजैकपात	मानुष	पुरुष	2
26	उत्तरभाद्रपद (उतृट्टाति)	अहिर्बुध्नि	मानुष	स्त्री	2
27	रेवती	पूष	दैव	स्त्री	3



पंचतंत्र कथा

(अथवा नीति शास्त्र)

कथा - १ भागु (ई)

संपादक - जी. पी. कामत, नोयडा

(नवंबर 2015 जत्तेरि....)

कोल्याक फटवण पळ्ळेलि काणि अयकतना पिंगलकाक स्वल्प धैर्य जल्लें। संगतोलो जल्लो - "अरे धमनक तूवें संगूचे परमार्थ। जल्यारि मेगेले परिवार सर्वय भीतीन अस्सय। हांवे इत्तें कोर्का ?"

धमनक - राजन्, "यथा राजा तथा प्रजा"। ते देक्कून आत्मधैर्य घे। हांव वोच्चून तो शब्दु कोसोलो, कोणालो म्हणु जानकारि घेव्नु एत्ता।

पिंगलक - इत्ते संगता तूँ ? थंगा तूँ एकलो वत्ता ?

धमनक - राजन्, रय्याले हिताक स्वयं जीवा भय कोर्चे सेवकाक मन्त्रि स्थानारि दोवोर्चाक नज। रय्यालो आदेशु उतले कठिन जल्यारीयि, सात समुद्र तारण कोर्का जल्यारीयि ते पालन कोर्चो तं उत्तम सेवक।

यीं उत्तर अयकतना पिंगलकाक सन्तोषु जल्लो। कोल्याक वचाक आज्ञा दिल्ली। धमनकान वोच्चून जत्तेरि सिंहाक संशोयु जल्लो। "अरे, उतले उच्च कुलावि जावो, रय्यान अपमानित कोर्नु कामा थकून सोळोलो व्यक्ती रय्याले नाशु जवंचे संदर्भु चोव्नु रबताय। धमनक कोलो, सूत्र अनि फटवण जन्म स्वभाव ते वर्गाचांक। यो धमनक मेगेले नाशाक ते भयंकर जन्तूक हंगा हडतवे म्होणु कोणाक कळता ?" ये विचार मन्त्रा एत्ताना पिंगलक रबिले स्थल सोणु स्वल्प दूरा वोच्चून रबीलो।

धमनक सिंहान संगिले ते दिशारि चंकीलो। थंगा पवंचानीक संजीवक पड्याक ताणे दिकुचानीक तक्का आश्चर्य व सन्तोषूय जल्लो। "अरे, मेगेले भाग्य। रय्याक मेगेले मुष्ठीन्तु रबोवंचाक वाट मेळी। रोगु ना जल्यारि वोयदाक विसर्ताय। संकट ना जल्यारि देवा विसोर्नु वत्ताय। रायु मन्त्र्याकय।" ये मन्त्रा लेकून धमनक कोल्लो पड्यालगि थकून पिंगलका लगि पोर्तून गेलो। *(शेष लगी अंकान्तु)*

08-05-2016 होनावर - शरावती कलाकेन्द्रांतु दवोर्नु कोंकणी खार्वी PUC, Degree विद्यार्थियांक विश्व कोंकणी स्कोलरषिप वितरण केल्लें।

04-05-2016 कोच्चिन कलाक्षेत्राले "अंगेलो देवु" म्हळेले कोंकणी सामूह्य नाटक चोन्नत्त वेणुगोपाल देवळान्तु खेळेय्लें।

सुमनांचें स्मरण-15

कृष्ण नारायण नायक, कोच्ची

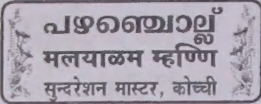


चम्पें



"स्नेहा" - अबोन गोविन्द नाम स्मरण राबैलें। चिके विश्रामाक वेळु जला म्हुण स्नेहाक कळें। पायवाट सोणु कडेन अस्सिले दड मान्दून सोळेले रुका पोन्दाक तीं पांचयि जाण वोचून बेसलीं। वारें मार्ता तसीचि चांप्या गम गम आयलो। "पांवचाक जत्ता स्नेहा" अबोन सांगीलें। "चम्पीं मेजून न्हय चंप्या रूक मेजून हारवतलीं; तितूले रुक तं मुकारि।" फूडे अनुभवान्तु थाकून अबोन जाणैलें। "सावट, शेळोवु, सुगन्ध, अनुयुक्त शान्त सारवत्त मधुर संगीत स्तोत्र-दिव्य वातावरण थांगा।" आबु विवर्सिता आसा। लघु भक्षण वांटून घेतलें; उदाकय पिल्लीं। दुसेरि बायर सर्लि। "लगेज" मुफ्त संविधाना वाटेन पेटैलें दिकून चोडूक चोवंकूक कसलो भारु प्रयासु ना। टि.टि.डी. संविधांनारि तांका कृतार्थता दिसली। उजेयि दावेयि कडेचान अबोलेय अय्येलेय हाथाक धोर्नु मोधें स्नेहा, अम्मायि बप्पायि सन्त मगल्यान - तसि तं प्रयाण। अबोले हरि स्मरणेक औसून तींवयि नामघोषान्तु भागु घेत्तायि। मुकारि वत्तायि तसीचि - "अबोन सांगिलें शेंभरि सम" स्नेहाक दिसलें। केद्दिं केद्दिं चम्पीं कसलो पोरमोळ, सर्वकडेय, उत्तूलें - लेक ना, लेकूक जायना। कोण तुन्टेयना फपायना-देवालें, देवाक हा हा धन्य ! अद्याक वत्ताले तिका अतिशय दिसलो। चेरायल नाग चम्पें, मुट्टत्त पुन्नाग चम्पें, कोचि लान्दे चम्पें.... गेलेले वेळेरि दिकिलो उडगास आयलो तिका। तीं कुलावीं; सग्ग फन्ताय दीवाळे अभिषेका चम्पेल नरसिं देवळान्तु थाकून वुणेचि मेळ्तलें तांका। उतूले काळ गेल्यारीयि वायट जावना। विधीन लेकान कर्तायि दीकून आसूयात। छटिने तिका चम्पेका उडगास आयलो। चम्पेकालें सहज नांव यशोदक्का तं। तांगेथंयि चांग चम्प्या रूक आस। जांवचाक आरांभिल्यारि हाथ बोट पांवचि सग काडतलीं। देवळांकडे दित्तलीं। विकूना। वर्लीलीं दवोर्नु सोडतली। दर्ला मुकावेल्यान एवनु वत्तले चेलियांक एकेक वान्टीतली, सोरु तांयि। सोदून एत्तलीं थांगा। तन्तु भर्सि नृत्यगिन्ता फान्ति तिगेले जिबेरि लपलपेली। - "जायि जूयि चम्पें मोगोरें.....।"

अनुपम प्रकृति वैभव दिकून तिका विस्मय भर्लें। ब्रह्माण्डान्तु वेंकटाद्रि समान स्थान वगळे ना म्हळीलि उद्धरणी काव्यालंकार न्हय म्हुण तिका सिद्ध जालें। चम्प्या सुगन्ध प्रवाहान्तु लीन जाव्नु, टीवीन्तु - चम्प्या हार फान्तियो अलंकार केलेलें तिरुमलेश दृश्य मनान्तु संकल्पून आवो आये हाथाक जाग्रतेन धोर्नु प्रत्यक्ष दर्शनाक प्रतिक्षेन ती मुकारि वत्तचि राबीलि। ❉



"മുല്ലപ്പൂമ്പൊടിയേറ്റുകിടക്കും കല്ലിനുമുണ്ടാമൊരു സൗരഭ്യം"

मोगोर्यालग्गि पळ्ळेले पथराकयि सुगन्धु येत्ता।

संसर्गारि थकूनु मू गुणूयि दोषूयि जत्ता। पथराक एकु पोरमोळु सरि ना, जल्यारीयि मोग्गोर्या सामीप्या खत्तीरि तं सुगन्धु जल्लोलो। तश्शीचि सज्जना संसर्गान एकल्यारि सल्गुण येव्यात। उल्टा चिन्तन केल्यारि, दुष्ट संसर्गान दोषफलय येव्यात म्होणु अस्स। स्वभाव रूपवत्करणा बगेक विद्यालयांतु एंचे एक छात्राक सल्गुण सम्पन्नु जल्लेले एक दोस्ता आवश्यस्स। जल्यारि मात्रं तं तो एकु मातृका विद्यार्थि जत्तोलो। तशी तो ते समूहाकयि, विद्यालयाकयि अभिमानु जाव्नु बदल्सतलो। दुःस्वभावि जाव्नश्शिल्ले दोस्ता खत्तीरि हज्जे उल्टा अनुभव जत्तले म्होणु अम्मि मन्नां कोर्का जाव्नु अस्स। हंतु थकूनु सज्जन सम्पर्कु कोर्का जल्लेले प्राधान्य तुंका मन्ना जल्ले नवें ?



रंदणीचे झगडे

- एल. सुब्रह्मण्यन, त्रिप्पूणित्तुरा

उणाव मोळ्ळा मसोळि मेळ्ळी
गणसे असी सुंगोट मेळ्ळे
ताणी तज्जे उमोण केळ्ळे
अणी मक्का कुयां वळ्ळी

आंय जयत्ती कुय्याँ हयलीं
मांयके न कुय्याँ, मांयके न रंन्तोयी
मयेंणी योणु तक्का सोवलें
तियेणी इनतीले एयदोण

मज्जा बयलोय उप्पास पोळ्ळीं
तज्जो सिरापु मक्का मेलो
केणाय जत्ता इसीची
कोणकोय जत्ता इसीची।

शीवेलि

- एन. सदानन्द कम्मत, कोच्ची



देवळान्तु चळ्ळी कोडि
एय्ली हस्ति तीनि
हस्ते फट्टीरि देवु
उत्तूले सुन्दर दर्शन

धर्लि पट्या सत्तूलि
वारें घालूक चर्वं
तज्जे मगलान अय्णे
उत्तूले चन्दाये दर्शन

पॅळ्ळी बड्डी चेण्ड्यारि
वज्जीतायि कोम्बूयि ताळूयि
मत्तें हलेय्तायि हस्तीयोयि
चोय्यायि देवालि शीवेलि.



दुड्डॅ

- कु. अञ्जली किणी, कोच्ची

केल्लो हात-पाय खोल्लो
काम कोर्नु हुम्मेन न्हल्लो
अल्मारीन्तु अस्सा दुड्वा मोलो
उश्या पोन्दाक चवियां झोल्लो

नीद नत्तिल्लि राती
दुड्डॅ फारनु वत्तले मळ्ळेलि भीति
उडकी मारनु व्हणति
स्वप्नान्तु येत्ताय चोरा जाती

धनाचे भ्रमान जन
विक्कूक तैय्यार जत्ताय मान
मनान्तु वडतेरि मोहा रान
दुड्वा मुक्कारि सग्ग सान

मनीष मनिष्यांक विक्कीताय
सगटाचे मोल धनान लेक्कीताय
केल्लोलो सहायु तुलासारि तुक्कीताय
धन मेळता तशीच चड मग्गीताय

मनान्तु केवल लाभु नष्ट
लक्षिंदेवीक आमी कोरना कोपिष्ट
दुड्वा गुण बहु विशिष्ट
हात्तान्तु मेळयार सोडूक कष्ट।



पण्डरिनाथा जय हरि विठला

- बी. रत्ना बाई, कोच्ची

पण्डरिनाथा जय हरि विठला
पाण्डुरंग श्री हरि विठला
पण्डरिपुरान्तु अवतारान् अय्लोलो
कलियुगान्तुल् अवतारु तुगेलो
विठळ पाण्डुरंग हरि (4) (पण्डरि)

वन्दन कर्ताय् तुग्गेल् चरणांचेरि
दृष्टि तुग्गेल् सदा भक्तांचेरि
हात दोवोर्नु रब्बील् तूं कुर्टाचेरि
चन्द दिस्ता तूँ चोंवचाक श्री हरि
विठळ पाण्डुरंग हरि (4) (पण्डरि)

लोकनाथा रुग्मायि वल्लभा
तुग्गेल् दया सदा अंचेरि जांव्का
विठळा श्री पुण्डलीकवरदा
दरशन दी अंका पाण्डुरंगा
विठळ पाण्डुरंग हरि (4) (पण्डरि)

तुग्गेल् चरणकमलांचो परम भक्तु
तुग्गेल् नांव नवीनचन्द्रु
तुग्गेल् प्रेरणेन केल्लेलि यी स्तूति
अय्कूनु अनुग्रहु कोर्का अंचेरि
विठळ पाण्डुरंग हरि (4) (पण्डरि)

DD 9 - चन्दना : 8-5-16 अनि 14-5-16 : कु. किरण कामत शेवगूर हिगेले 'भरतनाट्यम', 22, 28-5-16 कासरगोड चिन्ना लगि श्रुति कम्मत्तीन घेंवचे संदर्शन कार्यक्रमु अस्सिले।

मसिंगा

बायलाँ खातिर (ददल्यांकय)

- पत्मजा कामत, दिल्ली

सामग्री

1. मसिंगा फूल (जीवे या सुक्केयलेले)	- 150 ग्रां	4. ससं	- ½ चिपट
		5. करबेवा पत्ती	- 1 देण्टु
2. मिर्यासांगे पिट्टो	- 1 चिपट	6. हींगु	- रुचीक अनुसृत
3. तेल	- 1½ चिपट	7. मीट	- आवश्याक

मसिंगा फूल धूव्नु बेडुपु कोर्का। फूल, मिर्या पिट्टो, मीट दोनि कप उदकान्तु घाल्नु चांग प्रमाणी सिझोवंका। उपरान्ते, ससं, करबेवा पत्ती तेल तप्पोव्नु फण कोर्नु हन्तु मेळोवंका। रुचीक अनुसृत हींगा उदाक मेळोव्यात। 1½ चिपट नर्लेल घालका। हुम्माण तय्यार !

केरळ - कर्नाटक कोंकणी

- गुरुदत्त एस. प्रभु, कोच्ची

(फप्पळ) रोंटो - (फप्पळ) बेट्टो

अळ्ळिं - मिट्साणि ना

सग्ग अळ्ळिं अळ्ळिं - खंच्चाक मिटसाणि ना

चेर्डुवँ पॅरान - चेर्डुवॅ वर्क्यान

ती घडि पॅरान - ती घडि वर्क्यान

एक्कूट - एक कार्य

पोल्लो - कण्सळ

कोंकणी जोड पदां गोंचो

- नागेश आण्वेकार, कारवार

मान - मालगडे

चाकु - चूरि

बापय - आवयि

पोर - पोरि

सोयरे - दायरे

राग - देष

नकरो - निंदो

तंत्र - मंत्र

पेरशे - बेरशे

गर्वा - वासरा

गोंय आनी केरळ कोंकणींतलें अंतर

- एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची

थीर - स्थिर

पतकर - दायित्व

निवळ - परिशुद्ध

म्हयनो/माह - मास

म्हयनेम्हाल - मासमास

इतर/हेर - अन्य/वेगळें

लाव - लाभु

गीत/पद - गींतु/पद

भिवप/ भियेवप - भीवप

कोंकणी गीत प्रसारण - आकाशवाणी

तृश्शूर (630 Khz) MW
कोषिकोड (684 Khz) MW } मंगळाराचे संजे 5.00 धोर्नु 5.15 पर्यन्त

धारवाड (765 Khz) MW : सोमाराचे रत्ती 9.30 - 10.00 ना जल्यार 10.00 - 10.30

2-5-16 क रत्ति 10.00 धोर्नु 10.30 पर्यन्त भद्रगिरि अच्युत दासाले 'महासती सरस्वती' हरिकथा (कीर्तन) 16-5-16 - वासुदेव शानभाग हंगेले कोंकणी कविता वाचन अस्सिल्ले।

औषद पंक्ति - 52

अज्जेलीं वोक्कदां

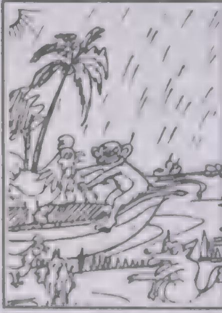
(मुत्तश्शि वैद्यं)

सुशीला टी. भट्, कोच्ची

<u>नांकांतुल्यान रक्त-स्राव</u> : थोगडे चेरडुवांक तानी धावनु-भोवनु खेळ्चे वेळारी, मत्तें बवगोवनु इत्तेंय कयरिं कोरचे समयारी, बोरोवंचे समयारी अनीक सग्ग नांकांचे पुटान्तुल्यान रक्तस्राव येवप अस्सा. ह्या रोगाक अनेक तराचीं कारणां संगताय जल्यारीय मस्तिष्कांतुले रक्ताचे सिरेंचेर पडचो आघातु तां प्रधान कारण जावनु लेकताय. हो आघातूच अनीक अनेक कारणानीय जावयात. चेरडाले जनन समयार येवंची चूकी धोरनु, गड्गडेवनु पडूनु, मत्यार अड्ळप घेवनु, पेट्टा खावनु सग्ग जावयात. हो रोगु अधिकतर बालकां मद्दें तां दृष्टि पडता. म्हलगडे जनांकय हें येत्ता. *(शेष लगी अंकान्तु)*

कुंकडा मंकडाक व्हार्डीक कश्शि ?

- यु. के. पै, पुत्तूर (कर्नाटका)



वत अनी पाव्सु आय्ले ।
कुंकडा मांकडाक व्हर्डिक जाल्ले ।।
दोणिरि बैसून व्हरण घेल्ले ।
काटयारि पूरा जेवणा गौजि ।।
इत्याक केल्ला वांय्गणा बज्जि ?
काटयारि बैसून जेवण जाल्ले ।
मेट्टारि बैसून फडिपान खेल्ले ।।

चईवां

-भक्ता आर. कासंगाड

नुतां सोळ्यार
मातें खातात !
मात्यार बसयल्यार
जीव खातात !

अमूल्य संपत्ती

-ए. पी. भानुप्रकाश,पच्चाळम, कोच्ची

ज्ञान एक अमूल्य संपत्ती
ज्ञान सदां अमूल्य
ज्ञान तें सदां अनश्वर
ज्ञान सदां प्राप्त कर तूं
स्वयं प्रकाशित जाता
तोंड तुगेलें आदित्या समान

तुळसीदास भजनां

- के. अनन्त भट्ट, कोच्ची

सांग कृपानिधे ! कोणाक सांगचें भवसमुद्राची पीडा ।
इन्द्रियँ सर्व सदा दुख भोगचीं, निजस्वभावान क्रीडा ।।१ ।।
जें सुख सम्पत्त स्वर्गु नरकु सग संतत लागी लागता ।
हरे! तुका विसोर्नु तें सग भाग्यहीन मन मागता ।।२ ।।
हांव अति दीनु, देवु दयालु तूं, आयकूनु मनाक मोग ।
दया दवरि रघुवीरु धीरु तूं, न्हंयतरि दुःख संयोग ।।३ ।।
यद्यपि हांव अपराध-भवन, तूं दुःख शमन मुरारी ।
तुळसिदासाक ही आशा तूवें, पतितांक राकले भारी ।।४ ।।

7-5-2016, फोंडा (गोंय) - राजीव गांधी कलामन्दिरान्तु अंत्रुज लळीतक निर्मित "भोगराज्य" कोंकणी नाटक खेळैय्लें ।



"लालनाद्बहवो दोषाः ताडनाद्बहवो गुणाः।
तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्नतु लालयेत्।।"

सुभाषित

❋

माया जी.कम्मत
कोच्ची

लाळनेन मस्त दोषयि, दण्डनेन मस्त गुणयि जत्तायि। त्या दिकूनु एकल्यान पुत्ताकयि, शिष्याकयि दण्ड दींव्का, नन्तन लाळन कोरूक नज्ज।

रसपति - आर. के. प्रकाश, पळ्ळूर



Dr. P. N. N. सिंह
डॉ. प्रश्नु ना नरसिंह
SSLC, PDC, BSc.,
MBBS (3 times)

गोविन्दु : डॉक्टर, मक्का चांग पोट्टा दूकि। कसलेंय वोकद दित्ताय वे ?

डॉक्टर - प्रश्नु ना, कसलेंय वोकद पूरो वे ? पोट्टा दुक्कियेचे वोकद नक्का वे ?

❋ ❋ ❋ ❋

रम्मू : डॉक्टर, ओपरेषन आजी नक्का। इत्याक म्हळयार आजी हाँव नल्लोना !

डॉक्टर : प्रश्नु ना, आनी नांवका म्हणु ना। बन्धु जन तुक्का नाणेयतले।

आळें (കടങ്കഥ/Riddles) - आर. तारा बाई, कोच्ची

एकचि अय्दनान्तु दोनि रंदयो

कुंक्कडा मोट्टो

परणी म्हणणी

- श्रीदेवी सुरेश प्रभु, कोच्ची



❋ मड्या मूळाक् दूद पिल्यारीयि सूरु म्हणतायि।

❋ मड्याक अनि मडियेक खड्डु एक कॅरॅपॅ।

❋ म्हॅशी घेवँचे फूडे दोर घेवंचे इत्याक ?

❋ म्हल्गड्यालें उत्तर प्रमाण कोर्का।

❋ रित्ते कोळस्यारि व्होडु / व्होळ्ळो सोव्दु।

चेर्डुवांलि चित्रं







कु. आदित्यकृष्णा जे. बालिगा (5)। कोच्चीचे जे. जगदीश बालिगा अनि चित्रलेखा हांगेलो सुपुत्र।

संत कबीरदास दोहा -



एन. लक्ष्मण मल्या, कोच्ची

"ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आगि
तेरा साँईं तुज्झमें, जागि सकै तो जागि।।"

हंतु सग्गीलें देवु मनुष्याले हृदयान्तूँचि अस्स। कबीर संगता - "कस्सी की तीळांतु तेल अस्स, चकमक पत्थरांतु उज्जो अस्स, तेचीवरि तुगेलो देवु, तुग्गेलं हृदयांतु अस्स। तूँ यो विषय जाण जाव्नु हंगायि थंगायि सोधूनु भौंचे नक्का। तूँ यें तत्व मना करी।"

संसारबन्धन - वी. सुरेश शेणै, कोच्ची

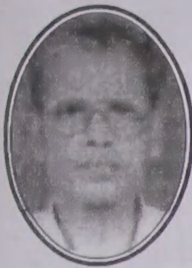
जन्मजन्मान्तर पुण्याचें फल
कर्मबन्धान्तु तें आत्माचें वल
कोणाक कळता तें जन्माचें मोल
भोग्गूचें तें ताणे तग्गेलें कपाल।
श्रेष्ठ यो नरजन्मु इत्याक मेळ्ळा?
मग्गूनत्तिलें अंका देवान दिल्ला
संसारबन्धनान्तु इत्याक बुड्डेय्ता?
सुख-दुःख सागरान्तु अंका तो घलता।
एकोलो पूतु तो जत्ता कुबेरु
अनियेकु पूतु तो जत्ता कुचेलु
दोग्गांकय जन्मु दिल्लेले ते अवसूक
ना फान्ति-भेदु तो तिग्गेले मनान्तु।
रवळरान्तु रव्वूचो मानवु
भंगरा पळेरान्तु खत्ता तो फळारु
दुसर्याक चांगपण करना मू
तज्जी दृष्टि ती पाव्ना मू खोंपियान्तु।
दान-धर्मु करना धनवन्तु
तक्का-यमधर्मु वरता तो नरकान्तु
दुर्वल्यालो नित्यसेवकु
तक्का-स्थानमान विष्णुलोकान्तु।।

योग्य वैराग्य

- विलासिनी नायक, कोच्ची

ये एक बवलेले झाड
भूमीर ना तांका दीस चड !
एद्दाण तागेलो प्रतापु दकयतालो
कण्टयानि अन्याक वृथा दुकेयतालो।
सहज एयला नाशु ताका जीवितान्तु
या वेळारि दीवनक्कायि कांय आघातु।
सुक्कंता अत्ता ताजे ते मूळ
जल्यारि खोंबूनकायि ताजेरि शूल।
करपूचे ताका सेल उद्दाक घालायि
जायत जल्यारि मनान्तु शान्ति दिय्यायि।
हुम्मेवचे ताका तुम्मी वारें घालायि
अन्त्या वेळारि आश्वास वाण्टायि।
नाका क्षणिक जीवितान्तु पूर्व वैराग्य
सहानुभूतीचि मू मानवांक योग्य।

13-5-2016 पळ्ळूर, DD कलामन्दिर पळ्ळूरुत्ति G.S.S.S. महिळा विभागाले आभि-मुख्यारि भक्तिगीन्त, लोकगीत, कोंकणी लघु नाटक 'विश्वासाचि सेल्फी' इत्यादी सग्ग एकडे कोर्नु 'कोंकणी सांज' कार्यक्रम घडेय्लो।



जी. सुधाकर प्रभु

- सरस्वति एस. प्रभु, कोच्ची

आलपळे गोविन्द प्रभु अनि सुंदरं हांगेलो प्रथमलो पूतु जाव्नु 1943 अक्तूबर 20 तारिकेक जन्मेले. अञ्चिकमळ अपलो मामु कृष्ण कम्मतांले घराकडे राबून धावें पर्यन्त सिक्कीले. उपरान्त 'बाटा इन्डिया लिमिटड' हांगा कामाक प्रवेश केलो. अनि कोच्चींत एव्नु स्थिरवासु केलो. कोच्चीचे बालकृष्ण पै अनि गंगा हांगेली सुपुत्री बी. नवीनकुमारी तं धर्मपत्नी. हांका एक पूतु अनि एक धूव आसाय.

बाटा सुधाकर माम म्हळेले नावान वोळकुचे हांचे हारमोणियम वाजप प्रसिद्ध तं. देवूच आपणालो गुरु म्हुण मनांत दृढविश्वास धोर्नु तन्नी हारमोणियम वाजूक प्रारंभ केलो. स्वप्रयत्नान अनि एकाग्रतेन ते स्वर वाजताले. भजन वाजूकय सिनेमा गींत वाजूकय तें एकच गदी अग्रगण्य जाले.

कोच्ची देवळांत अराटा सतवे दीसा मृगया विनोदाक देवु घोड्या फाटीर भायर सरतना हांचे वाजप जनांक आनन्द दित्ताले. खयींच आसय जाल्यारीय सातवे दिसा देवाक सेवा कोरूक ते धाव्नु पांवताले. ते पूर्वकाल एस.वै.ए. अनि जी.एस.ए. प्रवर्तक तं अस्सिले. ते एक कोंकणी भाषा प्रेमी तं अस्सिले. कोंकणी भाषा प्रचार सभेचे आभिमुख्यारि चमकिले सर्व कार्यक्रमांतुय तन्नि भागु घेत्तलो आसा. ओळ इन्डिया रेडियोंत गींत रेकोर्ड कोरूक अपले घरांतूच सर्व सन्नाहूय कोर्नु दिलो. कोंकणीचे हास्य कवि म्हुण विशेषण कोर्चे प्रसेनकुमाराले सर्व गींतय वाजुक अस्सिले अवसर हांका प्राप्त जालो. हांगेले गींताचे वाजप केसटांतूय आयलेले आसा.

कोच्चींत कोंकणी नाटक प्रारंभु जालेले वेळु थकून नाटकाचे गींताक सुधाकर मम्मान तं हारमोणियम वाजिलां. सुधाकर माम नत्तिले एक गान रचना ते कालाक नास्सिलि. हानि वजिल्ले अनेक नाटकांतुली प्रमुख तं कोंकणी भाषा प्रचार सभेले "वीर पाण्ड्य कट्ट बोम्मन", "भक्त मारकण्डेय", "भक्त प्रह्लाद", एस.वै.ए. ले "सति अनसूया" आदि नाटकां. हे एक वायलीन कलाकारय तं अस्सिले. शरीफ मास्टराले प्रशिक्षणान हान्नि वायलिनाचो आभ्यासु केला. अनेक गींत मास्टराले ओर्केस्ट्रा ट्रूपांत वाजूक हांका साध्य जाले.

हारमोणियम अपलो जीव तशी मानवुचे सुधाकर माम 2013 अप्रैल 18 तारिकेक वैकुण्ठ प्राप्त जाले. हांगेले आत्माक शांति प्राप्त जावो म्हुण प्रार्थन कोर्नु हें लेखन तांचे चरणांत समर्पण करता.

श्री पाण्डुरंग काणि

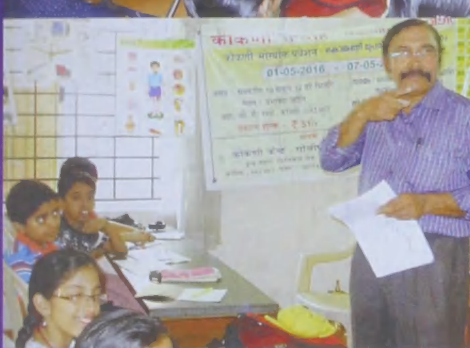
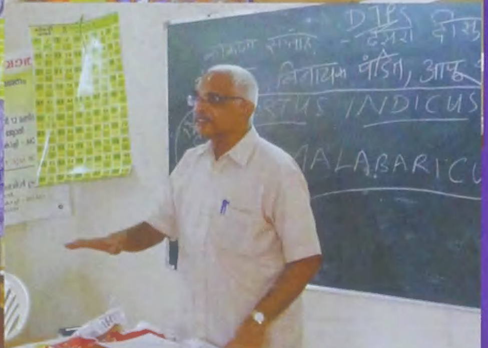
- गोश्रीपुरं हरिकुमार



कोंकणी सप्ताह - २०१६ : एदीं चित्रं

(चित्र : एन बालकृष्ण मल्ल्या आनी गोश्रीपुरं हरिकुमार)







Reg. No. KERKON/2012/45527
Vol. No. 5 Issue No. 6
Rs.5/-

Registered - No. KL/EKM/732/2015-17
Licence No. KL/CR/EKM/WPP.04/2015-17
Licensed to Post without Prepayment

SPANDAN

Published by : KERALA KONKANI ACADEMY, KOCHI

10th June 2016

Printed and published by Suresh A. Shenoi on behalf of Kerala Konkani Academy and Printed at M/s. Prakash Process, Srinivasa Mallan Road, Ernakulam, Kochi - 682 035, Ph : 2350960 and Published at 8/28, Santheri,1st Floor,Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road, Kochi - 682002. Editor - Suresh A. Shenoi